بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 24.02.2023 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

निष्ठा एवं आज्ञाकारिता की मूर्ति बदरी सहाबियों की पवित्र जीवनी का वर्णन

विरोधी परिस्थितियों के कारण पाकिस्तान, बर्कीना फ़ासो तथा अल-जज़ायर में बसने वाले अहमदियों के लिए दुआ और दान करने की प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 24 फ़रवरी 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- बदरी सहाबो जिनका वर्णन पहले हो चुका है उनके हवाले से कुछ बातों पर चर्चा रह गई थी जो बयान कर रहा था, उसक संदर्भ में आज भी बयान करूँगा जिसके बाद बदरी सहाबियों के बारे में यह सिलसिला जो मैं बयान करना चाहता था, वह समाप्त हो जाएगा।

हज़रत आमिर बिन रबीअः रज़ी. के बारे में लिखा है कि आप रज़ी. के पिता जी का नाम रबीअः बिन कअब बिन मालिक बिन रबीअः था। आप रज़ी. से कुछ रिवायतें भी मिलती हैं। अब्दुल्लाह बिन आमिर रबीअः रज़ी. अपनी माती जी हज़रत उम्मे अब्दुल्लाह लैला सुपुत्री अबू हशमा रज़ी. से रिवायत करते हैं कि वे बयान करती हैं कि हम हबशा की ओर जाने वाले थे और आमिर बिन रबीअः रज़ी. किसी काम के लिए कहीं गए हुए थे कि हज़रत उमर रज़ी. जो कि अभी शिर्क वाली अवस्था में थे, वहाँ आ निकले। उन्होंने हमसे पूछा कि क्या रवानगी है? मैंने कहा हाँ, अल्लाह की क़सम। हम अल्लाह की धरती में जाते हैं यहाँ तक कि अल्लाह हमारे लिए सरलता पैदा कर दे। तुम लोगों ने हमें बड़ा कष्ट दिया तथा हम पर बड़ अत्याचार किए हैं। हज़रत उमर रज़ी. ने कहा कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक हो! वे कहती हैं कि मैंने उस दिन हज़रत उमर रज़ी. की वाणी में वह दुःख अनुभव किया जो पहले कभी न देखा था। हमारे विस्थापन करने ने उन्हें दुखी कर दिया था। हज़रत आमिर रज़ी. जब वापस आए तो मैंने उनसे कहा कि क्या आप रज़ी. ने अभी उमर रज़ी. तथा उनके दुःख को देखा। हज़रत आमिर रज़ी. ने जवाब दिया कि क्या तू उनके मुसलमान होने की सूचना मिलने की इच्छुक है? फिर उन्होंने कहा कि ख़त्ताब का गधा मुसलमान हो सकता है किन्तु वह व्यक्ति इस्लाम नहीं ला सकता। हज़रत लैला कहती हैं कि आमिर रज़ी. ने यह बात उस निराशा के कारण कही थी जो उनको हज़रत उमर रज़ी. के इस्लाम विरोध तथा कठोरता के कारण पैदा हो गई थी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ी. बयान करते हैं कि उनके वालिद हज़रत आमिर बिन रबीअः रज़ी. ने बताया कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें किसी युद्ध अभियान में रवाना फ़रमाते

थे तो हमारे पास यात्रा में जीवित रहने की सामग्री केवल खजूर का एक थैला होती थी। सेना के मुख्या हमारे बीच एक मुट्ठी भर खजूर बाँट देते थे, धीरे धीरे वह समाप्त हो जाती तो फिर एक खजूर एक आदमी को मिला करती थी। अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैंने वालिद से पूछा कि एक खजूर से कैसे गुज़ारा होता होगा? उन्होंने कहा कि ऐसा न कहो, क्यूँकि उसका महत्त्व हमें समय पता चलता जब हमारे पास वह भी न होती।

जब हज़रत उमर रज़ी. ने अपनी ख़िलाफ़त के दौर में ख़ैबर के इलाक़े से यहूदियों को निकाल दिया तो क़ुरा नामक घाटी की ज़मीनें आपने जिन लोगों में आवंटित कीं उनमें हज़रत आमिर बिन रबीअः रज़ी. भी थे। हज़रत उमर रज़ी. जब जाबिया तशरीफ़ ले गए तो हज़रत आमिर रज़ी. साथ थे। एक रिवायत के अनुसार हज़रत उमर रज़ी. का झंडा हज़रत आमिर रज़ी. के पास था। हज़रत आमिर बिन रबीअः के देहान्त के विषय में मतभेद पाया जाता है परन्तु अल्लामा इब्ने असाकर के अनुसार 32 हिजरी वाला कथन अधिक उपयुक्त लगता है। आप रज़ी. के निधन के बारे में रिवायत है कि हज़रत उसमान रज़ी. की शहादत के बाद आप रज़ी. अपने घर में रहा करते थे, यहाँ तक कि आपका जनाज़ा घर से निकला।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ी. अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक व्यक्ति ने बनू फ़ज़ारह की एक महिला से दो जूते मेहर के बदल निकाह कर लिया। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस निकाह को वध कहा। अपने वालिद से ही रिवायत करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आप स. ने यात्रा में अपनी ऊँटनी की पीठ पर रात को नफ़ल पढ़े और आप स. का मुंह उसी ओर था जिस ओर ऊँटनी जा रही थी।

हज़रत आमिर बिन रबीअः रज़ी. बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक अंधेरी रात में यात्रा पर था। जब एक स्थान पर उतरे तो एक व्यक्ति ने पत्थर एकत्र किए तथा नमाज़ के लिए जगह बनाई तथा नमाज़ पढ़ी। सुबह को पता चला कि हमारा मुंह क़िबले से विरीत दिशा में था। हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई- وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ अर्थात- और अल्लाह ही का है पूरब भी तथा पश्चिम भी, अतः जिस ओर भी तुम मुंह फेर दो वहीं ख़ुदा का जलवा पाओगे। अर्थात नासमझी में यदि ऐसा हो गया तो कोई चिंता की बात नहीं है। हुज़ूर-ए-अनवर ने स्पष्ट किया कि यह भी हो सकता है कि यह आयत आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने समझाने के लिए पढ़ कर सुनाई हो, आवश्यक नहीं कि उसी समय अवतरित हुई हो।

हज़रत आमिर बिन रबीअः रज़ी. बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो मुझ पर एक बार दरूद भेजता है, अल्लाह उस पर दस बार सलामती भेजता है। अतः अब तुम्हारी इच्छा है कि मुझ पर कम दरूद भेजो अथवा अधिक दरूद भेजो। एब अन्य रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो बन्दा मुझ पर सलामती की दुआ करता है और जब तक वह उस अवस्था में रहता है, फ़रिश्ते भी उस पर सलामती की दुआ करते हैं। अतः बन्दे के अधिकार में है कि चाहे तो अधिक बार सलामती की दुआ करे और चाहे तो कम।

अगला वर्णन है हज़रत हराम बिन मलहान रज़ी. का। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. सहाबियों के बलिदानों के संदर्भ में बयान करते हैं कि हमें इतिहास पढ़ने से ज्ञात होता है कि सहाबी युद्धों में इस प्रकार

जाया करते थे कि उनको यूँ लगता था कि युद्ध मे शहीद होना उनके लिए सम्पूर्ण शांति एवं ख़ुशी का कारण है। अतः सहाबियों की प्रायः इस प्रकार की घटनाएँ इतिहास में मिलती हैं कि उन्होंने ख़ुदा की राह में मारे जाने को ही अपने लिए पूर्णतः शांति अनुभव किया। उदाहरणतः वे हाफ़िज़ जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरब के मध्य में एक क़बीले की आरे तबलीग़ के लिए भेजे थे उनमें से हराम बिन मलहान रज़ी. इस्लाम के पैग़ाम लेकर क़बीला आमिर के मुख्या आमिर बिन तुफ़ैल के पास गए तथा अन्य सहाबी पीछे रहे। आरम्भ में तो आमिर बिन तुफ़ैल तथा उसके साथियों ने पाखंड के रूप में उनकी आओभगत की परन्तु जब वे संतुष्ट होकर बैठ गए तथा तबलीग़ करने लगे तो उनमें से कुछ उपद्रवियों ने एक दुष्ट को संकेत किया तथा उसने संकेत पाते ही हराम बिन मलहान रज़ी. पर पीछे से भाले द्वारा हमला किया तथा वे गिर गए और गिरते ही सहसा उनकी ज़बान से यह निकला कि अल्लाहु अकबर فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَة। अर्थात मुझे कअबा के रब की क़सम, मैं मुक्ति पा गया। फिर उन उपद्रवियों ने शेष सहाबियों को घेर लिया तथा उन पर हमला कर दिया। उस अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ी. के द्वारा स्वतंत्र किए गए ग़ुलाम आमिर बिन फ़हीरा के सम्बंध में वर्णन मिलता है बल्कि स्वयं उनका हत्यारा जो बाद में मुसलमान हो गया था, वह अपने मुसलमान होने का कारण ही यह बयान करता था कि जब मैंने आमिर बिन फ़हीरा रज़ी. को शहीद किया तो उनके मुंह से सहसा यह निकला कि فزت واللہ अर्थात ख़ुदा की क़सम मैं तो अपनी मुराद को पहुंच गया हूँ। ये घटनाएँ बताती हैं कि सहाबियों के लिए मौत बजाए कष्ट के ख़ुशी का कारण होती थी।

अगला वर्णन है हज़रत सअद बिन ख़ौला रज़ी. का। आमिर बिन सअद रज़ी. अपने वालिद सअद बिन वक़ास रज़ी. से रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदा के अवसर पर मेरी बीमारी के बारे में पूछा, बीमारी के कारण मैं मौत तक पहुंच गया था। मैंने कहा कि मेरी पीड़ा आप स. देख रहे हैं। मेरी उत्तराधिकारी मेरी बेटी के अतिरिक्त कोई नहीं। मेरे पूछने पर आप स. ने फ़रमाया कि तीसरा भाग सदक़ा कर दो, फिर फ़रमाया कि उत्तराधिकारियों को उचित अवस्था में छोड़ना, कष्ट में छोड़ने से अच्छा है। अल्लाह की राह में जो भी ख़र्च करोगे तुम्हें उसका बदला दिया जाएगा, यहाँ तक कि एक निवाला भी जो अपनी पतनी के मुंह में डालो, उसका भी प्रतिफल दिया जाएगा। हज़रत सअद बिन ख़ौला रज़ी. हिजरत के बाद मक्का मे ही मृत्यु को प्राप्त हो गए।

अगला वर्णन है हज़रत अबुल हशीम बिन अत्तैहान रज़ी. का। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि मैं सबसे पहले आप स. की बैअत करने वाला हूँ, हम किस तरह आप स. की बैअत करें? आप स. ने फ़रमाया कि मेरी इस बात पर बैअत करो जिस पर बनो इसराईल ने मूसा अलै. की बैअत की। आप रज़ी. युद्ध में दो तलवारें लटकाया करते थे इस लिए आप रज़ी. को ज़ुस्सैफ़ैन भी कहा जाता है, इन्होंने सिफ़्फ़ीन नामक युद्ध में शहादत पाई थी।

फिर वर्णन है हज़रत आसिम बिन साबित रज़ी. का। इमाम राज़ी ने लिखा है कि युद्ध की लड़ाई में जो लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट थे उनमें हज़रत आसिम बिन साबित रज़ी. भी शामिल थे।

अगला वर्णन हज़रत सहल बिन हुनीफ़ रज़ी. का है। ओहद की लड़ाई में निकट रहने वालों में हज़रत सहल बिन हुनीफ़ रज़ी. का भी वर्णन है। हज़रत उमैर बिन सईद कहते हैं कि हज़रत अली रज़ी. ने

उनके जनाज़े की नमाज़ में पाँच तकबीरें पढ़ीं, लोगों ने आश्चर्य किया तो फ़रमाया कि ये सहल बिन हुनीफ़ हैं जो अह्ले बदर में से हैं तथा अह्ले बदर को अन्य लोगों पर एक विशिष्टता है, मैंने चाहा कि तुम्हें उनकी विशिष्टता बता दूँ।

फिर हज़रत जब्बार बिन सख़र रज़ी. का वर्णन है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली को डेढ़ सौ सहाबियों के साथ बनूते नामक स्थान के बुत फ़ुलुस को गिराने के लिए भेजा। आप स. ने हज़रत अली रज़ी. को काले रंग का झंडा तथा सफ़ेद रंग का छोटा परचम प्रदान किया। हज़रत अली रज़ी. ने सुबह के समय आले हातिम पर हमला किया तथा उनके फ़ुलुस नामक बुत को नष्ट कर दिया। इस अभियान में झंडा हज़रत जब्बार बिन हज़र रज़ी. के पास था।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- यहाँ यह सहाबियों का जो वर्णन में करना चाहता था, वह समाप्त हुआ। इसके साथ ही मैं पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ के लिए कहना चाहता हूँ। दुआ करें अल्लाह तआला उन पर जो कठोर हालात ह वहाँ आसानियाँ पैदा करे तथा न्याय करने वालों, क़ानून का पालन करने वालों तथा ख़ुदा एवं उसके रसूल के नाम पर अत्याचार करने वालों को अल्लाह तआला बुद्धि दे अथवा उनको पकड़ने की व्यवस्था करे। दूसरे बर्कीना फ़ासो के लिए भी दुआ करें, वहाँ भी यातनाएँ हैं अभी, तथा जो आतंकवादी हैं, कट्टर पंथी हैं, उनकी वही गतिविधियाँ हैं। अल्लाह तथा उसके रसूल के नाम पर अत्याचार कर रहे हैं। फिर अल-जज़ायर के लोगों के लिए भी, वहाँ भी कुछ सरकारी कार्यकर्ता अथवा न्यायालय जो हैं, अनुचित प्रकार के अत्याचारों को जारी रख रही हैं अहमदियों से। अल्लाह तआला सबको अपनो सरक्षा म रख, विशेषतः दुआओं तथा दान पर अधिक ज़ोर दें। अल्लाह तआला विरोधियों के उपद्रव स हर एक को बचाए।

अन्त में हुज़ूर पुर नूर ने पाकिस्तान में 19 फ़रवरी को अहमदियत के शत्रुओं द्वारा फ़ायरिंग में शहीद होने वाले मुकर्रम मुहम्मद रशीद साहब शहीद सुपुत्र चौधरी बशारत अहमद साहब तथा 6 फ़रवरी 2023 को तुर्किया से आए भूचाल में निधन हुए माँ बेटा मुकर्रमा अमानी बसाम अजलावी साहिबा और अज़ीज़म सलाह अब्दुल मुअीन क़तीश के अतिरिक्त मुकर्रम मक़सूद अहमद मुनीब साहब मुरब्बी सिलसिला के सद्गुणों का वर्णन फ़रमाते हुए उनके जनाज़े ग़ायब पढ़ाने की घाषणा फ़रमाई। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत तथा दयावान व्यवहार फ़रमाए, दर्जे बुलन्द करे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652
अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131